एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बेर में लगने वाले मुख्य रोगों व कीट का नियंत्रण

(*राकेश कुमार, विकास कुमार एवं जसवीर सिंह)
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविधालय, बीकानेर
* brorrk@gmail.com

बेर एक बहुपयोगी फलदार पौधा है। इसके फलों को मानव अपने खाने के लिए एवं पत्तों का प्रयोग पशुओं के चारे के रूप में करता है। बेर के फलों को गरीब का सेब एव शुष्क क्षेत्र का मेवा (राजा) भी कहा जाता है।

प्रमुख व्याधियां

1. छाछया (पाउडरी मिल्ड्यु या चूर्णी फफूंद)

इस रोग का प्रकोप अक्टूबर से दिखाई पड़ता है। इससे बेर की टहनियां, पत्तियां एवं फल सफेद कवक आवरण से ढक जाते हैं। प्रभावित पत्तियों एवं फलों की वृद्धि रूक जाती है और फल गिर जाते हैं। नियन्त्रण के लिये कैरोथेन एल सी 0.1 प्रतिषत या घुलनषील गंधक 0.2 प्रतिषत के तीन छिड़काव, प्रथम अक्टूबर में फूल आने से पहले और दो छिड़काव बाद में 15–15 दिन के अन्तराल से करने चाहिए। बेर की सेव किस्म इस रोग से सहनषील है।

2. जड़ गलन

इस रोग का पौधों की जड़ों तथा भूमि के पास वाले तने के भाग पर आक्रमण होता है। रोगी पौधे सूख जाते हैं। नियन्त्रण हेतु बीज को केप्टॉन या थाइरम या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रतिकिलो बीज के हिसाब से उपचारितकर के नर्सरी में बायें अथवा केप्टॉन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से भूमि को उपचारित करें।

3. पत्ती धब्बा/झुलसारोग

इस रोग के लक्षण नवम्बर माह में दिखाई देने लगते हैं। रोग ग्रसित पत्तियों पर छोटे–छोटे भूरे रंग के धब्बे बनते हैं तथा बाद में यह धब्बे भूरे रंग के तथा आकर में बढ़कर पूरी पत्ती पर फैल जाते हैं। पत्तियां सूखकर गिरने लग जाती है। नियन्त्रण हेतु रोग दिखाई देते ही मैन्कोजेब 3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी के हिसाब से दो से तीन छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

बेर की फसल में कई प्रकार के कीड़े लगते हैं, उनमें प्रमुख रूप से निम्नलिखित हैं–

1. फलमक्खी (कापेरिमेया बेसुवियना)

यह बेर में लगने वाला मुख्य कीट है। यह कीट पूरे भारत वर्ष में पाया जाता है। इस कीट का आक्रमण सितम्बर माह से शुरू होकर फसल पकने तक रहता है। इस कीट का प्रोढ़ भूरे रंग का होता है, जो घरेलु मक्खी से छोटा होता है। इसके वक्ष के चारों ओर काले धब्बे होते हैं एवं पंख पारदर्षी व पीली पट्टीयुक्त होते हैं। इस कीट की मादा मटर के आकार के फलों के छिलके में छेदकर तंतुनुमा आकार के अण्डे देती है। इन अण्डों में से 3 से 5 दिन के पश्चात् लट (मेगट) निकलती है। यह लटे फल के गुदे खाती है। यह लट 9 से 12 दिन में परिपक्व होकर फल से निकलकर जमीन में 6–15 सेमी. गहराई पर चली जाती है। लट के पश्चात जमीन में को अवस्था में 14–30 दिन रहकर प्रौढ़ बन जाती है।

हानि के लक्षण

इस कीट की मादा द्वारा फल में अण्डे देने से फल का आकार परिवर्तित हो जाता है, जो इस कीट के प्रकोप का प्रथम लक्षण होता है। इस कीट की लटफल के गुदे को खाती है। लटों द्वारा खाये गये फल भूरे पड़कर सड़ जाते हैं और उसमें बदबू आने लगती है। फलों की गुणवत्ता कम हो जाती है और वे खाने योग्य नहीं रहते हैं।

नियंत्रण

भूमि पर गिरे हुए ग्रसित फलों को समय–समय पर इकट्ठा कर उनको नष्ट कर देना चाहिए। बगीचे के आस–पास से बेर की जंगली झाड़ियों को हटा देनी चाहिए। बगीचे में गर्मियों में तीन जुताई क्रमषः मार्च–अप्रैल, मई–जून एवं अगस्त में करनी चाहिए, जिससे इस कीट के प्यूपा पक्षी व अन्य साधनों के द्वारा नष्ट हो जायेंगे।

बेर की फसल में मुख्य रूप से फलमक्खी, पत्तीभक्षक भृंग, लाख का कीट, रोयेदार लट, छालभक्षक कीट ईत्यादि नुकसान पहुंचाते है। इनके नियत्रण के विभिन्न उपायों के अलावा अगर सही समय पर फल वाले पेड़ों में काटछांट व फसल की देखभाल पर ध्यान दिया जाए तो कीट व बीमारियों से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है। बेर के वृक्ष पर, जब फल मटर के आकार के हो उस समय डाईमियोएट 30 ईसी 2 मिली या मेलाथियान 50 ईसी 1.5 मिली प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव 15–20 दिन पश्चात् पुनः दोहराईये।

2. पत्ती भक्षक भृंग

यह कीट भी पूरे भारत में पाया जाता है। यह बहुभक्षी कीट है जो बेर व अंगूर की पत्तियों को अधिक पसन्द करता है। इस कीट का प्रकोप मानसून की वर्षा के समय से षुरू होता है। इस कीट का प्रौढ़ चमकीले पीले रंग का होता है तथा पीले भूरे रंग के पंख होते हैं। इस कीट की मादा प्रौढ़ पौषी पौधों के पास भूमि में अनिष्चित अंतराल पर अगस्त तक अण्डे देती है। ये अण्डे 6 से 10 दिन में परिपक्व होकर लट (ग्रब) में परिवर्तित हो जाते है। इसकी लटें घासों की जड़ों व अन्य सब्जियों व फसलों के भागों को खाती है। इसकी लटें परिपक्व होने के पश्चात् पूरी सदी ससुप्तावस्था में चली जाती है जो अप्रैल में कोषावस्था में परिवर्तित हो जाती है। इस कीट की एक साल में एक पीढ़ी ही होती है।

हानि के लक्षण

रात्रिचर प्रौढ़ भृंग पत्तियों में गोलाकार छेद बनाकर खाते है। यदि कीट का प्रकोप बहुत अधिक होने पर वृक्ष पत्ती विहीन हो जाता है।

नियंत्रण

पेड़ों के तने के आस–पास की भूमि की समय–समय पर जुताई करनी चाहिए जिससे इस कीट की लटें व कोष नष्ट हो जाए। प्रौढ़ कीट को इकट्ठा करने के लिए प्रकाशपाष व फैरोमोन पाश का उपयोग करना चाहिए। जुलाई माह में वर्षा के तुरन्त पश्चात् पेड़ों पर कार्बोरिल 50 डब्ल्यूपी 4 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

3. छालभक्षक कीट

यह कीट अनार, बेर तथा अन्य फल वृक्षों को नुकसान पहुंचाता है। इस कीट के प्रौढ़ छोटे किन्तु मजबूत एवं हल्के चमकीले रंग के होते हैं। इस कीट का जीवनकाल लम्बा होता है। इस कीट के प्रौढ़ दाल की दरारों में 15–25 अण्डों के समूह में अप्रैल से जून में अण्डे देना प्रारम्भ करते हैं। इन अण्डों में 8–11 दिनों में लटें निकलती है, जो दिसम्बर में बेर के पेड़ों को नुकसान पहुंचाती है। इसके पश्चात् अप्रैल माह में यह कोष का निर्माण करती है। जिसमें से मई–जूनमें प्रौढ़ निकलते हैं। इस कीट की लटे पेड़ के तने में छोटी–छोटी दरारों की अपनी विष्टा से भर देती है और अत्याधिक प्रकोप होने पर इसकी लटें तने में गहराई तक सुरंगें बना लेती है जिनमें यह दिन में छिपी रहती है और रात को बाहर निकलकर छाल को खाती है। इस कीट से ग्रसित पेड़ों की शाखायें कमजोर हो जाती है व फल भी कम लगते हैं।

नियंत्रण

इस कीट से ग्रसित सूखी हुई शाखाओं को काटकर जला देना चाहिए। पेड़ के तनों में निर्मित सुरंगों को साफकर उनमें पिचकारी की सहायता से 3–5 मिली कैरोसिन तेल प्रति सुरंग डाले या उसका रूई का फाहा बनाकर सुरंग के अन्दर रखकर बाहर से गीली मिट्टी से बन्द कर दे।

समय–समय पर पेड़ की षाखाओं एवं डालियों पर क्यूनॉलफॉस ईसी दवा की 2 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बेर के पेड़ों में काटछांट कर रोगों व कीटों से बचाव

बेर के पेड़ों में सही कटिंग व पौध संरक्षण न करने पर फलों की पैदावार व उस की क्वालिटी पर बुरा असर पड़ता है, जिस से किसानों को बहुत नुकसान सहना पड़ता है। अगर सही समय पर फल वाले पेड़ों में काटछांट व फसल की देखभाल पर ध्यान दिया जाए तो कीट व बीमारियों से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है। बेर के पेड़ों में हर साल काटछांट करना बहुत जरूरी है। इस काम को हर साल मई के महीने में किया जाना चाहिए। अप्रैल में फलों की तोड़ाई के साथ ही बेर का पौधा गरमी के मौसम में ज्यादा तापमान, नमी की कमी व लू से बचे रहने के लिए सोने वाली स्थिति में चला जाता है। इस दौरान इस में काटछांट करने से पेड़ों को काटछांट का एहसास नहीं हो पाता है। जून में मानसून के साथ ही पेड़ों में
नया फुटाव शुरू हो जाता है।

बेर में काटछांट करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि जो शाखाएं पिछले साल निकली थीं, उन के ऊपर का लगभग आधे से तीनचौथाई हिस्सा काट देना चाहिए। 5 से 6 सालों में जब पेड़ ज्यादा घना होने लगे तो गहरी काटछांट करनी चाहिए। काटछांट करने के 7 से 10 दिनों बाद बेर में गहरी गुड़ाई कर के जरूरत के हिसाब से खाद व उर्वरक मिला देना चाहिए। जून में बारिश नहीं होने की स्थिति में 1 बार सिंचाई कर देनी चाहिए, जिससे नई कोपलें गरमी से झुलसेंगी नहीं व अधिक संख्या में फूल व फल लगेंगे। जानकारी की कमी की वजह से कुछ किसान बेर में सही समय पर काटछांट नहीं करते हैं, जिससे फलों के उत्पादन व क्वालिटी पर असर पड़ता है।

बेर में काटछांट नहीं करने से नई शाखाएं कम निकलती हैं, जिससे फूल व फल बहुत कम होते हैं। समय से पहले (अप्रैल महीने में) काटछांट करने से पौधों की नींद की स्थिति जल्दी खत्म हो जाती है व नई शाखाएं जल्दी निकल कर ज्यादा गरमी के कारण झुलस जाती हैं, जिस से उत्पादन पर गलत असर पड़ता है। ज्यादा देरी से (जुलाई महीने में) काटछांट करने से पेड़ की नींद खत्म हो जाती है, जिस से काटछांट वाली जगहों से पौधे का कोशारस निकल जाता है और नई शाखाएं बहुत कम निकलती हैं, नतीजतन फूल और फल बहुत कम लग पाते हैं। इसीलिए ज्यादा उत्पादन प्राप्त करने के लिए 15–30 मई के बीच बेर में काटछांट कर देनी चाहिए। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि काटछांट बहुत कम या बहुत ज्यादा नहीं हो।